ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 113-115**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

कुपोषण एंव शिक्षा एक समाजशास्त्रीय विवेचन बस्ती जनपद के संदर्भ मे

1. संध्या वरूण
2. डॉ0 संगीता पाण्डेय

1. शोध अध्येत्री, 2. आचार्य, समाजशास्त्र विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-02.05.2024, Revised-10.05.2024, Accepted-16.05.2024 E-mail: sandhyabst93@gmail.com

सारांश: ***किसी भी देश के लिए उसके नागरिकों का स्वास्थ्य होना अतिआवश्यक है, क्योंकि वही उनके आर्थिक स्तंभ होते है, किन्तु कुछ बीमारियां ऐसी होती है, जो मां के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है, जो बच्चें के विकास को प्रभावित करती है, इन्ही बीमारियो मे से एक गम्भीर बीमारी है, कुपोषण जो उचित सन्तुलित आहार व उचित वातावरण न मिल पाने के कारण होता है। यह पूरे विश्व की समस्या है, जो काफी प्रयास के बाद भी समाप्त नहीं हो पा रहा, विकसित देशों में भी यह स्थिति गंभीर बनी हुई हैं।***

भारत वर्ष में भी आजादी के पूर्व से ही कुपोषण अपना पैर पसारे हुए है, सरकार द्वारा इस समस्या के समाधान के लिए काफी प्रयास किए जा रहे है, किन्तु कोई भी योजना तभी सार्थक होती है, जब उनमे जागरूकता हो और जागरूकता का काम हमारी शिक्षा करती है। भारतवर्ष मे 2011 की जनगणना के अनुसार पुरूषों में 74.04: और महिलाओ में 65.46: है। वही उत्तरप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षारता दर केवल 57.18 % है और पुरूषों में 77.28 % है। कम उम्र में लडकियों के विवाह के कारण उन्हें अपनी शिक्षा अधूरी छोडनी पडती है, जिससे थोडा बहुत शिक्षित होने के बावजूद उनमें समझ बहुत उच्चस्तर तक विकसित नहीं हो पाता है, वह पूरे परिवार का ध्यान तो रखती है, किन्तु अपने स्वास्थ्य के प्रति लपरवाह हो जाती है, उचित संतुलित पोषण आहार तथा लम्बाई व बढने की प्रकिया अपने उम्र के हिसाब से कम रहता है। जिससे वह सीखने के क्षमता प्रभावित होती है और बच्चो की तुलना मे मन्दगति से अनुकूलन कर पाते है और कुपोषण की स्थिति गंभीर हो जाती है, जिससे बच्चें की मृत्यु भी हो जाती है।

कुंजीभूत शब्द– महिला कुपोषण, स्वास्थ्य , महिला शिक्षा, विकास, आर्थिक स्तंभ, सन्तुलित आहार, वातावरण, आजादी, समाधान ।

कुपोषण एक ऐसे कुचक्र है। जिसमें वह अपने मां के गर्भ में ही फंस जाता है, जब मानव शरीर में असन्तुलित आहार व पोषक तत्व की कमी हो जाती है, तो ऐसी स्थिति कुपोषण कहलाती है।

कुपोषण बच्चों में 6 माह से 3 वर्ष की अवधि में तीव्रता से बढता है, यह मुख्यतः 6 रूपों में दृष्टिगत होते है–

1– जन्म के समय कम वजन
2– बचपन में बाधित विकास
3– अल्परक्तता
4– विटामिन ए की कमी
5– आयोडीन कमी संबधित बीमारियां
6– मोटापा

बच्चों में कुपोषण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है :

1– नाटापन (Stuting)
2– निर्बलता (Wasting)
3– कम वजन (Under Weight)

बच्चों मे कुपोषण की स्थिति में बच्चें का उम्र व उंचाई के अनुरूप उसक वजन कम होता है एंव पेट बढा हुआ होता है उसके हाथ, पैर पतले और कमजोर है तथा वह बार–बार बीमार व संक्रमित रहता है।

भारत पूरे विश्व मे भूख व कुपोषण से सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में है। यहां की आधा से अधिक आबादी मध्यम वर्ग व गरीब वर्ग श्रेणी से आते है, जो किसी तरह से बमुश्किल दो वक्त की रोटी की व्यवस्था कर पाते है, इस स्थिति मे महिलाओं की स्थिति चिन्ता जनक बनी हुई है।

स्वास्थ्य पर ध्यान न देने के कारण से वह स्वंय एनीमिया का शिकार हो जाती है और बाद में बच्चा जन्म के समय बच्चा कमजोर रह जाता है, इसका सीधा संबध लोगो के स्वास्थ्य संकट से भी है, कम उम्र के बच्चें या छोटें बच्चें की पोषण की स्थिति सबसे चिन्ता जनक है। N.F.H.S.– 3 के आंकडो से पता चला कि 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की लगभग 50% मौतें नजदीकी तौर पर उनके पोषक की अल्पता की स्थिति से जुड़ी हुई है।

2019 में एक पत्रिका जिसका नाम 'द लैसेट' था, इसमे बताया गया, कि भारत में 5 वर्ष से कम बच्चों की मौतो में से एक तिहाई (113) की मृत्यु का कारण कुपोषण है, जो कि एक चिन्ता का विषय है।

महिला कुपोषण की परिभाषा– Word health Organization के अनुसार, 'कुपोषण का तात्पर्य, पोषक तत्वों के सेवन में कमी या अधिकता, आवश्यक पोषक तत्वों के खराब उपयोग से है।' कुपोषण जिसे संक्रमण और खराब स्वास्थ्य और सामाजिक स्थितियों के साथ कैलोरी, प्रोटिन, विटामिन और खनिजों की कमी के कारण होने वाले खराब स्वास्थ्य के रूप में परिभाषित किया गया है, दुनिया भर में लाखों महिलाओं और किशोरियो की ताकत और कल्याण को खत्म कर देता है, किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य की मूलभूत आधारशील, महिलाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि अपर्याप्त पोषण न केवल महिलाओं के स्वंय स्वास्थ्य पर, बल्कि उनके

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

बच्चो के स्वास्थ्य पर भी हॉनिकारक दुष्प्रभाव पडता है।

कुपोषण उन्मूलन हेतु महिला शिक्षा की भूमिका अज्ञानता अधिकांश रोगो की जननी है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का आभाव हमें कई बीमारीयों को निमंत्रण देते है। शिक्षा हमें औपचारिक व अनौपचारिक दोनो रूपों से हमें सुर्दढ बनाती है, कहते है, अगर महिला शिक्षित है, तो पूरा परिवार शिक्षित होता है, शिक्षित होने के कारण उनमें उचित समझ विकसित होती है एंव अपने व परिवार दोनो के स्वास्थ्य का उचित ध्यान देती है, किन्तु समाज में कुरीतियों एंव अज्ञानता के कारण कम उम्र में विवाह कर दिया जाता है तथा उम्र में विवाह कर दिया जाता है तथा उनकी स्कूली शिक्षा अधूरी रह जाती है।

भारत में 100 में से 29 लडकियां प्रारम्भिक शिक्षा का संपूर्ण चक्र पूरा नहीं कर पाती, ऐसे बच्चें गरीबी रेखा के नीचे निवास करने वाले होते है, स्कूल न जाने वाले बच्चों में ज्यादातर 75% छः राज्यो उत्तर–प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, ओडिशा, पं0 बंगाल मे केन्द्रित है, अधूरी शिक्षा होने के कारण उनमें उचित समझ विकसित नहीं हो पाती एंव जीवन के उचित निर्णय लेने में असमर्थ होती है, जिससे राष्ट् व समाज में चल रही योजनाओं से अनिभिज्ञ होने के कारण अपना व देश का विकास नही कर पाती।

सहित्य समीक्षा– 'घोष स्मृतिकाना ने 'बचपन में कुपोषण के लिए जिम्मेदार कारकः सहित्य समीक्षा में बताया है कि सामाजिक व आर्थिक कारक कैसे कुपोषण को प्रभावित करता है एंव एक मां का उसके बच्चों के शारीरीक, मानसिक स्तर के व शिक्षा पर प्रभाव का उल्लेख किया है, इन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का कुपोषण पर असर किस रूप में पड़ रहा इसका अध्ययन किया है, इनका अध्ययन विभिन्न आनलाइन डेटाबेस से जुडे प्रकाशित लेख पर एक पूर्ण व्यवस्थित समीक्षा पर अधारित है।

"राणा एंव दास" ने प्रार्यमरी एजुकेशन इन 'झारखण्ड एण्ड पॉलिटिकल वीकली' पुस्तक के अध्ययन में बताया है कि बच्चों में खराब स्वास्थ्य व पोषण का शैक्षणिक उपलब्धियो के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, साथ ही यह स्कूली शिक्षा, नामांकन, ठहराव मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

"मनु क्षेत्रपाल एम" ने 'जेण्डर डिफरसेंस इन फूड कंजेप्शन पैटर्न एण्ड न्यूट्रिएंटइनटेल फ इण्डियन प्रीस्कूल चिल्ड्रेन 3–4 वर्ष इन हरियाणा स्टेट "पुस्तक में लिखा है, कि स्कूल में पढ़ने वाले लडकें व लड़कियों के खान–पान और सुविधाओ में असमनता देखने को मिलती है, इन्होंने हरियाणा राज्य के क्षेत्रो का अध्ययन किया है।

मिश्रा, आर0 एन0 सी0 पी0 मिश्रा, टी0 बी0 सिंह 2007 में 'न्यूट्रिशनल स्टेटस एंमग अण्डर फाइव चिल्ड्न एन ए विपेज इन हुगली डिस्ट्रिक्ट' पत्रिका में बताया है कि खान–पान की आदतो व पोषण स्तर किस प्राकर आपस में संबधित है। इन्होंने बनारस के 520 विद्यालयों के मलिन बस्तियों बच्चों के स्तरीकृत दैव निर्देशन विधि से चयनकर अध्ययन किया है, सर्वे में 74.42% बच्चें कुपोषण श्रेणी में आते थे। इनमें कैल्शियम, प्रोटिन लौह–तत्व विटामिन ए जैसे जरूरी पोषक तत्व निर्धारित मानक से 50% कम था।

अध्ययन का उद्देश्य– कुपोषण व महिला शिक्षा से संबधित विविध पुस्तकों, पत्रिकाओ, रिपोर्ट राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एंव शोध पत्रो के अध्ययन करने के पश्चात् प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि शिक्षा किस प्रकार कुपोषण की स्थिती से संबधित है, विश्व स्तर पर किए गए कुपोषण की स्थिति से संबधित है, विश्व स्तर पर किए गए कुपोषण उन्मूलन हेतु प्रयास व विविध राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका का ग्रमीण क्षेत्रो में जागरूकता आदि का विश्लेषण करना है, स्वास्थ्य व शिक्षा के प्रति महिलाओं व उनके परिवार, समाज के दृष्टिकोण का अध्ययन करना भी प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध पत्र में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसकी प्रकृति वर्णनात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है, यह शोध–पत्र कुपोषण को उत्पन्न करने वाले कारकों व शिक्षा की भूमिका की समीक्षा व विश्लेषित करता है, सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वास कुपोषण की जड को दृढ़ करती है और शिक्षा इन सभी का विनाश करती है, समय के साथ बदलती परिस्थितियो ने कुपोषण के आँकड़ों को कुछ कम किया है व बाल मृत्यु दर में शिथिलता आई है, द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से शोध–पत्र में संबधित आंकडे प्रस्तुत किए गये है।

महिला स्वास्थ्य के लिए शिक्षा की परिभाषा– शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करती है, उचित समझ विकसित है, सभी समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है, किसी भी देश की जनता उसकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। जनता जब स्वस्थ होती है, तो वह देश के विकास में अहम भूमिका निभाती है और जब महिला शिक्षित होती है, तो वह परिवार व समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, महिला ही बच्चें की प्रथम शिक्षक होती है, महिला के शिक्षित होने से वह अपने व अपने परिवार के स्वास्थ का संपूर्ण ध्यान देती है, पोषकयुक्त भोजन, व्यायाम, आदि को दिनचर्या में डालती है, साथ ही देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, महिला ही बच्चें की प्रथम शिक्षक होने से वह अपने व अपने परिवार के स्वास्थय का संपूर्ण ध्यान देती है, पोषक युक्त भोजन, व्यायाम, आदि को दिनचर्या में डालती है, साथ ही देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, भारत वर्तमान समय में युवा ही देश के विकास में जोश के साथ अहम भूमिका निभाता है और जहां युवाओं में महिलाएं शिक्षित हो, वह देश और भी तीव्र गति से विकास करता है। शिक्षित महिलाएं उद्योग, व्यवसाय, वकालत, पुलिस आदि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही। घर के साथ–साथ बच्चों एंव यवसाय को बखूबी सांमजस्य बैठती है एंव माताएं जब शिक्षित होती है, तो वे अपने बच्चों को एक कुशल व सुयोग्य नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करती है।

निष्कर्ष– कुपोषण एक गंभीर समस्या है, क्योंकि यह बाल मृत्यु दर व मातृ मृत्यु दर को बढ़ाता है तथा देश के विकास में अवरूद्ध उत्पन्न करता है। कुपोषण उन्मूलन हेतु जागरूकता आवश्यक है और शिक्षा इसमें अहम भूमिका निभाती है, सरकार द्वारा भी विभिन्न योजनाओं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

के माध्यम से कुपोषण को कम करने का प्रयासरत है, किन्तु अशिक्षा, कुरीतियों, आडम्बर के कारण वह सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ नहीं ले पाते तथा सन्तुलित व पौष्टिक खाद्य पदार्थो के प्रति अज्ञानता भी कुपोषण उन्मूलन हेतु प्रयासरत् है। कुपोषण उन्मूलन हेतु हमें महिला स्वास्थ्य के प्रति लोगों को सचेत करना होगा तथा खाद्य पदार्था की पौष्टिकता के बारे में जागरूकता पैदा करना होगा, तभी हम अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहुजा राम (2004) सामाजिक समस्याएं, रावत पब्लिकेशन जयपुर पृ0 34.
2. वैश्विक भूख सूचकांक (2011), द इन्टरनेशनल फूड पॅलिसी रिसर्च इंस्टीट्य वाशिंगटन, डी0सी0।
3. मनु क्षेत्रपाल एन य (2006) जेण्डर डिफरेसंस इन फूड कंजप्शन पैटर्न एण्ड न्यूटिएंट इनटे ऑफ इण्डियन स्टेट, न्यूट्रिशन एण्ड हेल्थ अंक – 18 पृ0 141.
4. घोष स्मृतिकाना, पुस्तक "Child Malunutrition in India : An Assessment of ICDS Programme 2016 Pg- 101–108.
5. आर. कुमार, 1988 , 'चाइल्ड डेवलेपमेंट इन इण्डिया, आशीष पब्लिसिंग नई दिल्ली 1988.
6. डा. जी. पी. शैरी 1971– पोषण एंव आधार विज्ञान पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. यूनिसेफ, 1984– एन एनालाइसिस ऑफ द सिच्युएशन ऑफ दि चिल्ड्रेन इन इण्डिया, न्यू, देलही।
8. मित्तल, ए. जे. सिंह एंव एस. के अहलूवालिया (2007), ' इफेक्ट ऑफ मेटरनल फैक्टर्स ऑन न्यूट्रिशनल स्टेटस ऑफ 1–5 ईयर्स ओल्ड चिल्ड्रेन इन अर्बन स्लम पापुलेशन, इंण्डियन जनरल ऑफ कम्यूनिटी मेडिसिन, अवस 32 इश्यू–4 पृ0 264–267.
9. पल्टा, अरूणा (2001), आधारभूत पोषण, शिवा प्रकाशन, आगरा पृ0 12.
10. चन्द्रा, शैलजा (2014), भारत का स्वास्थ्य मुद्दें और चुनौतियां योजना, वर्ष– 2 फरवरी अंक 57.

*****